12 फरार नक्सलियों व उग्रवादियों के विरुद्ध इनाम की अनुशंसा की गई है झारखंड में। पुलिस मुख्यालय ने गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव से यह मांग की है। इसे मुख्यमंत्री कार्यालय को अनुमति के लिए भेजा गया है।

मस्जिद के साथ अन्य विकल्पों पर विचार करेगा सुन्नी वक्फ बोर्ड

पांच एकड़ भूमि का मामला ▶ सभी प्रस्तावों पर 26 को बैठक में होगी चर्चा

स्कूल-कॉलेज से लेकर दार्शनिक स्थल विकसित करने के मिले प्रस्ताव

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

सुन्नी वक्फ बोर्ड अयोध्या में मिलने वाली पांच एकड़ भूमि में मस्जिद बनाने के साथ-साथ और क्या बनाया जा सकता है, इसके सभी विकल्पों पर विचार करेगा। अयोध्या में मिलने वाली जमीन पर स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, विश्वविद्यालय सहित विभिन्न संस्थाओं की स्थापना के प्रस्ताव बोर्ड को प्राप्त हुए हैं। इन सभी प्रस्तावों को 26 नवंबर को होने वाली बोर्ड बैठक में रखा जाएगा।

दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या मामले में सुन्नी वक्फ बोर्ड को पांच एकड़ भूमि देने का निर्णय किया है। इस निर्णय पर मुस्लिम पक्ष एकमत नहीं हैं। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और कुछ पक्षकार जमीन न लेने के लिए दबाव बना रहे हैं। हालांकि सुन्नी वक्फ बोर्ड ने इस मसले पर साफ कह दिया है कि पांच एकड़ भूमि लेने या न लेने का फैसला उनकी बोर्ड मीटिंग में तय होगा।

सुन्नी वक्फ बोर्ड के चेयरमैन जुफर फारुकी कहते हैं कि 26 नवंबर की बैठक में भूमि लेने या न लेने का फैसला हो जाएगा। पांच एकड़ जमीन में मस्जिद के साथ ही और क्या-क्या बनाया जा सकता है इसके सभी विकल्पों पर बोर्ड विचार करेगा। सूत्रों के अनुसार जो प्रस्ताव आए हैं उनमें स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, म्यूजियम आदि से संबंधित हैं। कुछ प्रस्ताव ऐसे हैं जिनमें पांच एकड़ भूमि पर दार्शनिक स्थल विकसित करने की बात है।

कुछ प्रस्ताव ऐसे हैं जिसमें इस परिसर को हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल के रूप में विकसित करने के लिए कहा गया है। हालांकि, इस पर अंतिम फैसला 26 नवंबर को होने वाली सुन्नी वक्फ बोर्ड की बैठक में लिया जाएगा।

अयोध्या फैसले में सिख कल्ट के प्रयोग पर एतराज

जागरण संवाददाता, कानपुर : अयोध्या मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले में सिख कल्ट (छोटा समूह) शब्द का प्रयोग किया गया है। इस पर एतराज जताते हुए सिखों ने श्रीअकाल तख्त साहिब के जत्थेदार को पत्र भेजा है। याचिका डालने की तैयारी भी है।

सुप्रीम कोर्ट में अपनी गवाही में सरदार महेंद्र सिंह ने श्रीगुरुनानक देवजी के अयोध्या जाने का जिक्र किया है। सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में सिख कल्ट शब्द का प्रयोग किया है। श्रीगुरुसिंह सभा के प्रमुख सरदार हरविंदर सिंह लार्ड ने बताया कि उक्त शब्द से सिख समाज पर खराब प्रभाव पड़ रहा है। इस मामले में दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी समेत कई संगठन एक प्लेटफार्म पर हैं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में याचिका डालने के लिए तैयारी की बात कही।

मंगलवार को गुरुद्वारा भाई बन्नो साहिब के वाइस चेयरमैन सरदार मोहकम सिंह ने श्रीअकाल तख्त साहिब के जत्थेदार को पत्र लिखा कि सिख धर्म शब्द का प्रयोग होना चाहिए था। सिख धर्म छोटा समूह नहीं है। उधर गुरमत कॉलेज दिल्ली के चेयरमैन सरदार हरिंदर पाल सिंह ने आगे की कार्रवाई के लिए सरदार मोहकम सिंह से संपर्क साधा है।

पुनर्विचार याचिका पर विचार के लिए जुटेगा जमीयत का मदनी गुट

जासं, नई दिल्ली : जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष अरशद मदनी के राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ पुनर्विचार याचिका दाखिल करने के निर्णय के बीच अब निगाहें जमीयत के महमूद मदनी गुट के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आपात बैठक पर है। बैठक बुधवार शाम को दिल्ली स्थित जमीयत के मुख्यालय में होगी। अभी तक जमीयत के महासचिव महमूद मदनी ने रुख स्पष्ट नहीं किया है। वह रविवार को पुनर्विचार याचिका को लेकर लखनऊ में हुई मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड व जमीयत की बैठक बीच में छोड़कर निकल गए थे। ऐसे में उनके रुख को लेकर कयासों का बाजार गर्म है। हालांकि, उनके एक करीबी ने कहा कि उनका अकेले का फैसला जमीयत का निर्णय नहीं हो सकता है। कार्यकारिणी की बैठक में जो सर्वसम्मति बनेगी, वही अंतिम फैसला होगा। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में देशभर से कार्यकारिणी के 40 सदस्यों के अलावा कानून के जानकार भी शामिल होंगे। जमीयत के महमूद मदनी गुट को प्रगतिशीलवादी माना जाता है।

कल निकलेगी राम बरात, पंजीकरण के लिए लगी लोगों की कतार

जागरण संवाददाता, अयोध्या

▶ कारसेवकपुरम से जनकपुर के लिए रवाना होगी बरात

▶ सीता-राम विवाहोत्सव को यादगार बनाने के लिए विहिप ने लगाया जोर

राममंदिर पर फैसला आने के बाद विहिप सीता-राम विवाहोत्सव को यादगार बनाने में जुट गई है। इसके लिए नेतृत्व पूरा जोर लगा रहा है। गुरुवार को कारसेवकपुरम से जनकपुर के लिए निकलने वाली राम बरात की तैयारियां पूरे जोर पर दिखीं। बरात में शामिल होने के लिए पंजीकरण कराने वालों की कतार लगी रही। कार्यक्रम का संयोजन कर रहे विहिप नेता संतों को अक्षत-हल्दी देकर बरात के लिए आमंत्रित कर रहे हैं।

बरात की अगुवाई करने के लिए दो सुसज्जित मंदिरनुमा रथ अयोध्या पहुंच चुके हैं। रथ की साज-सज्जा की जा रही है। इन दोनों रथों पर भगवान के स्वरूप और विग्रह विराजमान होंगे। बरात में शामिल होने के लिए मणिरामदासजी की छावनी के उत्तराधिकारी महंत कमलनयनदास, संत समिति के अध्यक्ष महंत कन्हैयादास, सियाराम किला झुनकीघाट के महंत करुणानिधान शरण, दिगंबर अखाड़ा के महंत सुरेशदास, बड़ाभक्तमाल के उत्तराधिकारी महंत अवधेशदास, गोलाघाट के महंत सियाकिशोरीशरण, महंत रामशरणदास, रामायणी रामशंकर दास, महंत अवधबिहारी दास जैसे प्रमुख संतों ने सहमति दे दी है।

यात्रा संयोजक राजेंद्र सिंह पंकज ने बताया कि बरात में सुदूर क्षेत्रों तक के श्रद्धालु शामिल होंगे। इनके आवास एवं भोजन की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जा रही है। विहिप प्रवक्ता शरद शर्मा के अनुसार कारसेवकपुरम में बरात को लेकर चहल-पहल बढ़ गई है। बरात का प्रस्थान कराने के लिए विहिप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री अंबरीष व केंद्रीय प्रबंध समिति के सदस्य पुरुषोत्तमनारायण सिंह अयोध्या पहुंच चुके हैं।

नवंबर के अंत में जनकपुर पहुंचेगी बरात: बरात इसी माह के अंत तक जनकपुर पहुंचेगी। राम विवाहोत्सव एक दिसंबर को जनकपुर में ही प्रस्तावित है। उत्सव के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी आमंत्रण भेजा गया है। उत्सव में नेपाल के शाही परिवार के भी शामिल होने का अनुमान है।

राम बरात उत्सव में नहीं चल पाएगी अयोध्या-जनकपुर बस सेवा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अयोध्या में 21 नवंबर को होने वाले राम बरात उत्सव में अयोध्या-जनकपुर के बीच बस सेवा का संचालन नहीं हो पाएगा। इसका कारण विलंब से परमिट जारी करना है। राज्य परिवहन प्राधिकरण (एसटीए) ने मंगलवार को इस बस सेवा का परमिट जारी किया। ऐसे में बस सेवा शुरू करने में समय लगेगा। इसके लिए केंद्र सरकार व नेपाल सरकार से परिवहन निगम को अनुमति लेनी होगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक साल पहले नवंबर 2018 में लखनऊ से हरी झंडी दिखाकर अयोध्या-जनकपुर के बीच बस सेवा शुरू की थी। इस बस सेवा को एक साल के लिए ही परमिट मिला था। ऐसे में इसका नवीनीकरण समय से हो जाता तो परमिट खत्म न होता। रोडवेज के अफसरों का कहना है कि उन्होंने समय पर फाइल शासन में परिवहन विभाग के पास भेज दी थी। लेकिन समय बीतता गया और अफसरों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। परमिट नवीनीकरण न होने के कारण रोडवेज को मजबूरन यह बस सेवा बंद करनी पड़ी।

उत्तर प्रदेश परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक डॉ. राजशेखर कहते हैं कि अगर परमिट समय रहते मिल गया होता तो इस अंतरराष्ट्रीय बस सेवा के लिए भारत व नेपाल सरकार से अनुमति ले ली गई होती। ऐसे में अब बस सेवा के संचालन में थोड़ा समय लगेगा।

मंदिर आंदोलन के पर्याय रहे रामचंद्रदास परमहंस की समाधि को उद्धार का इंतजार

रघुवरशरण, अयोध्या

सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के साथ ही मंदिर आंदोलन के पर्याय रहे रामचंद्रदास परमहंस का स्वप्न तो साकार हो गया, लेकिन पुण्य सलिला सरयू के संत तुलसीदास घाट स्थित उनकी समाधि लंबे अर्से से दिन बहुरने की बाट जोह रही है। वह 31 जुलाई 2003 का ब्रह्म मुहूर्त था जब परमहंस चिरनिद्रा में लीन हुए और उसी दिन मध्याह्न पुण्य सलिला के तट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया।

मंदिर आंदोलन के इस महान दूत को अंतिम प्रणाम करने तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, उप राष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत, संघ प्रमुख केसी सुदर्शन, विहिप सुप्रीमो अशोक सिंहल सहित कई केंद्रीय मंत्री एवं राज्यपाल के अलावा संतों और श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा था। जिस स्थल पर उनका अंतिम संस्कार किया गया था, उसी स्थल पर उनका भस्मावशेष संरक्षित कर समाधि का रूप दिया गया।

शीर्ष सत्ताधीशों और अन्य दिग्गजों की मौजूदगी से यह उम्मीद जगी कि परमहंस की समाधि उनके कद के अनुरूप जल्द ही भव्य स्वरूप लेगी, लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। फौरी तौर पर चबूतरे की शक्ल में निर्मित की गई मंदिर आंदोलन के पुरोधा की समाधि कुछ ही वर्षों में जर्जर होकर गड्ढे में तब्दील हो गई। समाधि के ऊपर जो टीन शेड लगा था, वह सड़-गल कर उपेक्षा की कहानी बयां करने लगा।

सरयू किनारे संत तुलसीदास घाट पर रामचंद्रदास परमहंस की समाधि। जागरण

शिष्य ने उठाया बीड़ा

ऐसे ही करीब एक दशक गुजर गया। अंततः समाधि को उपेक्षा के भंवर से उबारने का बीड़ा परमहंस के शिष्य आचार्य नारायण मिश्र ने उठाया। उन्होंने जन सहयोग से समाधि को भव्य कक्ष के रूप में विकसित किया और गुरु की नियमित सेवा-पूजा सुनिश्चित कराई। गुरु की रुचि के अनुरूप प्रायः भोज-भंडारा का सिलसिला शुरू किया। प्रत्येक वर्ष पुण्यतिथि के अवसर पर परमहंस के अनुरागियों का समागम सुनिश्चित कराया। नारायण मिश्र चाहते हैं कि गुरु परमहंस के विराट व्यक्तित्व की तरह उनकी समाधि भव्य स्मारक के रूप में विकसित हो। राममंदिर के साथ स्मारक को भी भव्यता मिले।

बीएचयू में विरोध से आहत मुस्लिम शिक्षक ने छोड़ा बनारस

जागरण संवाददाता, वाराणसी

▶ विवि प्रशासन ने की पुष्टि, माहौल ठीक होने के बाद होगी वापसी

▶ धरनारत छात्रों ने कुलपति की गाड़ी पर फेंकी खाली बोतल

बीएचयू स्थित संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय में नियुक्ति को लेकर उपजे विवाद ने आखिरकार फिरोज खान के हौसले को डिगा दिया। विरोध के क्रम में कुलपति आवास के सामने 13वें दिन भी छात्रों का धरना जारी रहा। वहीं इससे आहत असिस्टेंट प्रोफेसर ने अपने घर जयपुर लौटना उचित समझा। हालांकि विवि प्रशासन नियुक्ति की बात पर कायम है।

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के साहित्य विभाग में उनकी नियुक्ति 'वेद का छंद शास्त्र' पढ़ाने के लिए हुई थी। पांच नवंबर को फिरोज ने ज्वाइन किया और सात नवंबर से छात्रों ने उनकी नियुक्ति का विरोध शुरू कर दिया। उधर, विरोध के चलते फिरोज सामने नहीं आ रहे थे। नियम व अधिनियम के विरुद्ध नियुक्ति का आरोप लगाते हुए छात्र निष्पक्ष जांच को लेकर अड़े हैं। छात्रों की मांग है कि विवि प्रशासन या तो इस नियुक्ति को रद करे या फिर फिरोज खान को विवि में ही कहीं अन्यत्र नियुक्त करे।

कुलपति पर फेंकी खाली बोतल : मंगलवार शाम कुलपति आवास लौटने के दौरान वीसी प्रो. राकेश भटनागर की गाड़ी पर धरनारत छात्रों में से किसी ने खाली बोतल फेंक दी। इस कृत्य से वहां तैनात सुरक्षाकर्मी सन्न रह गए। थोड़ी देर के लिए वहां गहमागहमी की स्थिति बनी रही। हालांकि कुलपति की गाड़ी बिना रुके आवास के भीतर चली गई।

बुलाई आपात बैठक : घटना के बाद कुलपति ने देर शाम आपात बैठक बुलाई। सूत्रों के मुताबिक छात्रों के कृत्य से विवि प्रशासन खासा नाराज है। धरनारत छात्रों पर सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है। वहीं छात्रों के मुताबिक उनकी ओर से ऐसा कोई भी कृत्य नहीं किया गया है।

असिस्टेंट प्रोफेसर के साथ बीएचयू

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के एपीआरओ चंद्रशेखर के मुताबिक नियुक्ति को लेकर विवि का रुख पूर्ववत एवं स्पष्ट है। विश्वविद्यालय धर्म, जाति, संप्रदाय, लिंग आदि के भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्र निर्माण के लिए सभी को अध्ययन एवं अध्यापन के समान अवसर उपलब्ध कराने को प्रतिबद्ध है।

प्रोफेसर की नियुक्ति तथ्यात्मक रूप से गलत : विहिप

जासं, नई दिल्ली : काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के संस्कृत विभाग में मुस्लिम प्रोफेसर की नियुक्ति को विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने तथ्यात्मक रूप से गलत माना है। विहिप के अनुसार शिक्षक की नियुक्ति सामान्य अध्ययन में नहीं, बल्कि संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान विभाग में हुई है। इसमें जिन धर्मों का जन्म भारत में हुआ है, उसकी शिक्षा दी जाती है। इसमें भारतीय धर्म के दर्शन, परंपराओं और पूजा पद्धति को पढ़ाना है। ऐसे में विश्वविद्यालय प्रशासन को नियुक्ति फैसले पर पुनर्विचार करना चाहिए। हालांकि विहिप के कार्याध्यक्ष आलोक कुमार ने स्पष्ट किया कि वह मुस्लिम शिक्षक द्वारा संस्कृत पढ़ाए जाने के विरोध में नहीं है, बल्कि वह इसके पक्ष में है। सभी धर्म के लोग आगे आएं और संस्कृत पढ़े-पढ़ाएं।

'मैंने संस्कृत को पूजा, घर में बचपन से देखी कृष्ण की फोटो'

जागरण संवाददाता, जयपुर

▶ डॉ. फिरोज ने कहा-मेरे दादा गो ग्रास निकालने के बाद ही करते थे भोजन

▶ पिता गो सेवा करने के साथ ही गाते हैं भजन-कीर्तन

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में संस्कृत के सहायक प्रोफेसर बने जयपुर के बगरू निवासी डॉ. फिरोज खान का मानना है कि सभी धर्म एकता और प्रेम का संदेश देते हैं। वह कहते हैं कि मुस्लिम समुदाय से होने के बावजूद पांचवीं कक्षा से संस्कृत की पढ़ाई शुरू की और फिर जयपुर के राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान से एमए और पीएचडी की उपाधि हासिल की। मैंने हमेशा संस्कृत को पूजा है। मेरे घर पर भगवान कृष्ण की फोटो लगी है। मेरे साथ पहले कभी भी धार्मिक भेदभाव नहीं हुआ।

हालिया मसले को लेकर दैनिक जागरण ने फिरोज खान से मोबाइल फोन के माध्यम से बात की। पहले तो उनके पिता रमजान खान अपने बेटे से बात कराने को तैयार नहीं हुए, लेकिन बाद में राजी हो गए। उन्होंने ही अपने फोन से बेटे से बात कराई। इस दौरान फिरोज खान ने कहा कि मेरे दादा संगीत विशारद गफूर खान सुबह और शाम गो ग्रास निकालने के बाद ही भोजन करते थे। पिता रमजान खान गो सेवक के साथ ही भजन गायक हैं। कई शहरों में जाकर वह कीर्तन-भजन गाते हैं। मैंने बचपन से ही घर में भगवान कृष्ण की फोटो देखी है। पूरा परिवार गो सेवा में व्यस्त रहता है।

सभी लोगों ने मुझे प्रोत्साहन दिया : फिरोज ने कहा कि बचपन से लेकर पीएचडी तक की शिक्षा ग्रहण करने दौरान कभी धार्मिक भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ा। सभी लोगों ने संस्कृत पढ़ने को लेकर प्रोत्साहन दिया । लेकिन, अब बीएचयू में प्रोफेसर बनते ही धर्म के आधार पर देखा जाने लगा है । उन्होंने बताया कि गांव और राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान तक उन्हें कभी धर्म के आधार पर न तो उपेक्षित किया गया और न ही किसी ने गलत नजरों से देखा । मैंने हमेशा संस्कृत को पूजा है।

फिरोज खान को बीएचयू में प्रोफेसर बनाए जाने के बाद से वहां के छात्र विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन जयपुर स्थित राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के प्राचार्य प्रोफेसर अर्कनाथ चौधरी अपने विद्यार्थी के इस मुकाम तक पर पहुंचने पर बेहद खुश हैं। उन्होंने कहा कि फिरोज खान होनहार युवा है। फिरोज खान को 14 अगस्त को संस्कृत दिवस की पूर्व संध्या पर जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में संस्कृत युवा प्रतिभा सम्मान समारोह में सम्मानति किया गया था। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उन्हें सम्मानित किया था।

इलाहाबाद विवि में मुस्लिम छात्र भी पढ़ रहे वेद-उपनिषद

गुरुदीप त्रिपाठी, प्रयागराज

▶ विवि के संस्कृत विभाग में मुस्लिम छात्रों के दाखिला लेने पर नहीं है रोक

भाषा पर किसी मजहब का विशेषाधिकार नहीं। इसे साबित करता है पूरब के ऑक्सफोर्ड यानी इलाहाबाद विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग। यहां अध्ययनरत चांद मुहम्मद और अब दिल्ली में शोध कर रहे इरफान वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे दौर में जब बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में फिरोज खान की बतौर असिस्टेंट प्रोफेसर नियुक्ति को लेकर विवाद गर्म है, यहां पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं कहीं न कहीं थोड़े व्यथित हैं।

इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में छह मुस्लिम विद्यार्थी वर्तमान में वेद-उपनिषद और श्रीमद्भागवत गीता पढ़ रहे हैं। पूर्व में कुछ छात्र बाकायदा शोध कर चुके हैं। कुछ अब भी कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर राम सेवक दुबे बताते हैं कि विश्वविद्यालय के संस्कृत पाठ्यक्रम में श्रीमद्भागवत गीता, वेद, उपनिषद और महाकाव्य में शिशुपाल वध आदि शामिल हैं। मुस्लिम विद्यार्थियों को इसमें प्रवेश पर रोक नहीं है। विभागाध्यक्ष प्रो. उमाकांत यादव कहते हैं कि यहां से पढ़ाई कर चुके कई छात्र आज शोध कर रहे हैं। करछना के सोनाई गांव निवासी चांद मुहम्मद एमए (संस्कृत) अंतिम वर्ष के छात्र हैं। कहते हैं विषय तो सभी के लिए है। बीएचयू में मुस्लिम प्रोफेसर की नियुक्ति पर नाहक बखेड़ा हो रहा है। वह सवाल करते हैं कि मजहब के आधार पर भाषा का बंटवारा कैसे हो सकता है? बकौल चांद मुहम्मद वह छठवीं कक्षा में ही माहेश्वर सूत्र सीख चुके थे। नई दिल्ली से उन्होंने शिक्षाशास्त्री की उपाधि ली। वह घर के इकलौते सदस्य हैं जो वेद-उपनिषद पढ़ रहे हैं। उनके जीवन का सूत्र वाक्य है वसुधैव कुटुंबकम। मो. तानिब, आवेश अहमद, अमजद अंसारी, गुलशन बानो और फहमिदा फरहीन भी इविवि में संस्कृत पढ़ रहे हैं। 2012 में संस्कृत में परास्नातक कर चुके इरफान सिद्दीकी वर्तमान में दिल्ली विवि में आधुनिक संस्कृत पर शोध कर रहे हैं। 2013 में परास्नातक करने वाले ताहिर अली इन दिनों दिल्ली में वेद और पुराण पर शोध कर रहे हैं।

प्रो. किश्वर जबीं नसरीन बनीं मिसाल

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्व अध्यक्ष प्रो. किश्वर जबीं नसरीन की चर्चा आज भी होती है। उन्होंने जिस आत्मीयता से संस्कृत से नाता जोड़ा, वह अनुकरणीय है। उनकी बहन अफ्शा जबी सिनी का भी संस्कृत से बहुत लगाव है।

बाल यौन अपराधों में जांच की स्थिति स्तब्धकारी : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने बच्चों के खिलाफ यौन अपराधों के मामलों में जांच और सुनवाई की स्थिति को स्तब्धकारी बताया है। सर्वोच्च अदालत ने केंद्र और सभी राज्य सरकारों को निर्देश दिया है कि वह त्वरित गति से जांच के लिए और सक्रिय भूमिका निभाएं। ताकि ऐसे मामलों की सुनवाई एक साल के अंदर पूरी हो जाए।

बच्चों के खिलाफ दुष्कर्म की घटनाओं की बढ़ती तादाद के चलते सर्वोच्च अदालत ने स्वतः संज्ञान लेकर पहले ही कई दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसके तहत उन सभी जिलों में खास यही मामले देखने के लिए अदालतें गठित करने को कहा गया है जहां पॉक्सो अधिनियम के तहत 100 से अधिक मामले दर्ज हों।

विगत 13 नवंबर को तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने सुप्रीम कोर्ट के रेजिस्ट्रार सुरिंदर एस.राठी की तैयार रिपोर्ट पर संज्ञान लिया था। उन्होंने कहा था कि बच्चों के यौन शोषण के पॉक्सो एक्ट के तहत दर्ज मामलों में सुनवाई एक साल के अंदर पूरी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह रिपोर्ट स्तब्ध करने वाले हालात बयान करती है। सुनवाई की क्या कहें, जब ऐसे 20 फीसद मामलों में एक साल के अंदर जांच तक पूरी नहीं हो पाती। खंडपीठ ने कहा कि पीड़ितों की मदद के लिए ना तो कोई सहायक उपलब्ध कराया जाता है और ना ही उन्हें मुआवजा दिया जाता है। एक साल से भी अधिक समय से करीब दो-तिहाई मामले सुनवाई के लिए लंबित हैं।

विगत 17 नवंबर को सेवानिवृत्त हो चुके जस्टिस गोगोई ने कहा कि जांच शुरू होने से लेकर सुनवाई तक कहीं भी पोक्सो एक्ट के तहत दिए जाने वाली समय सीमा का पालन नहीं किया गया। रजिस्ट्रार राठी की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कोर्ट ने कहा कि ऐसा लगता है कि ऐसे मामलों से संबद्ध अधिकारी अधिनियम के तहत निर्धारित समय सीमा में काम इसलिए पूरा नहीं कर पाते क्योंकि उन्हें इसकी जानकारी ही नहीं है और प्रतिबद्धता की भी कमी है। इसीलिए खंडपीठ ने सभी राज्य सरकारों और केंद्र को समय से जांच और सुनवाई पूरी करने के लिए अतिरिक्त कार्यबलों का इस्तेमाल करने को कहा है। मौजूदा कानून के तहत कम गंभीर मामलों में जांच एजेंसियों को आरोप पत्र 60 दिनों के अंदर दायर करना चाहिए। जबकि कम से कम दस साल की जेल होने वाले गंभीर मामलों में 90 दिनों के अंदर आरोप पत्र दायर करना चाहिए।

पुनर्विचार याचिका पर फिर विचार करे पर्सनल लॉ बोर्ड : शाहनवाज

शाहनवाज हुसैन। फाइल

जासं, गाजियाबाद : भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शाहनवाज हुसैन ने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को पुनर्विचार याचिका डालने पर फिर से विचार करने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को हिंदू व मुस्लिम दोनों पक्षों ने स्वीकार किया है। इस फैसले के बाद पूरे देश में कहीं कोई भी घटना नहीं हुई। इससे साफ है कि दोनों पक्षों में कितना आपसी सौहार्द है। मंगलवार को गाजियाबाद के मालीवाड़ा में मीडिया से महाराष्ट्र में राजनीतिक हालात पर कहा कि भाजपा महाराष्ट्र में नंबर एक पार्टी है। हमने उद्धव ठाकरे की मौजूदगी में जनता से जनादेश मांगा और कहा कि केंद्र में नरेंद्र और महाराष्ट्र में देवेंद्र के नाम पर वोट करें। शिवसेना को सीट भी भाजपा के नाम पर मिली। शिवसेना ने शर्त रखी कि बड़ी पार्टी का सीएम होगा।

बोले इरफान हबीब

दिल्ली का नाम 'ढिल्ली' कर दीजिए

जाने-माने इतिहासकार बोले, खोदाई में मिले शिलालेख पर संस्कृत में 'ढिल्ली' दर्ज, कहा, 16वीं सदी में अस्तित्व में आया आगरा

संतोष शर्मा, अलीगढ़

आगरा का नाम अग्रवन करने की कोशिशों से शहरों के नामों को लेकर फिर विवाद गर्म हो गया है। अलीगढ़ का नाम भी हरिगढ़ करने की आवाज तेज हो गई है। इस बीच अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) के इमेरिटस प्रोफेसर इरफान हबीब ने कहा है कि नाम तो दिल्ली का भी बदला जाना चाहिए। सरकार को दिल्ली का नाम 'ढिल्ली' कर देना चाहिए। दिल्ली में खोदाई में मिले शिलालेखों में संस्कृत में यह दर्ज है।

प्रो. इरफान हबीब ने कहा कि सरकार ने पहले इलाहाबाद का नाम प्रयागराज किया। अब आगरा का नाम बदलने की आवाज उठ रही है। वह बताते हैं कि आगरा का अस्तित्व 16वीं शताब्दी से मिलता है। सिकंदर लोधी के दौर में लोधी राजाओं ने आगरा किले का निर्माण कराया था। अकबर के कार्यकाल में किले का पुनर्निर्माण हुआ। शाहजहां के शासन में भी आगरा का नाम बदल कर अकबराबाद किया गया। शाहजहां ने आगरा ही नहीं पुरानी दिल्ली का नाम शाहजहांनाबाद कर दिया। लेकिन पुराने दोनों नाम इतने प्रचलित थे कि नए दोनों ही नाम चल नहीं पाए।

आगरा में रहने वाले वैश्य समुदाय के अग्रवालों को पहले अग्रोहा कहते थे, जो हरियाणा से आए थे। इनके नाम पर ही नाम बदलने की बात होती है। प्रो. हबीब का मानना है कि नाम बदलना कोई बड़ा काम नहीं, कोई भी सरकार यह कर सकती है। परंतु जब नाम ही बदले जा रहे हैं तो दिल्ली का नाम भी ढिल्ली कर देना चाहिए। खोदाई में मिले शिलालेखों (इंस्क्रप्शन) में संस्कृत में इसका नाम 'ढिल्ली' मिला है। 'ढिल्ली' का अर्थ ढेले जैसे से है, वैसे भी दिल्ली शहर ऊंचाई पर बसा है। कुछ इतिहासकार यह भी मानते हैं कि दिल्ली के प्रथम मध्यकालीन नगर की स्थापना तोमरों ने की थी, जो ढिल्ली या ढिल्लिका कहलाती थी। ढिल्लिका का नाम सबसे पहले राजस्थान के बिजोलिया के 1170 ईस्वी के अभिलेखों में आता है, जिसमें दिल्ली में चौहानों के अधिकार किए जाने का जिक्र है। सरवन शिलालेख में भी ढिल्लन शब्द का उल्लेख मिलता है।

प्रो. इरफान हबीब। जागरण

मंत्री बोले, अल्लाहबाद को प्रयागराज कर दिया

मंगलवार को अलीगढ़ आए उत्तर प्रदेश के शहरी आवास एवं नगर विकास मंत्री महेशचंद गुप्ता ने कहा कि हमारी सरकार ने अल्लाहबाद को प्रयागराज और फैजाबाद का नाम बदलकर अयोध्या कर दिया। इससे पहले उन्हें वार्ष्णेय पहल संस्था की ओर से अलीगढ़ का नाम हरिगढ़ रखने के लिए ज्ञापन सौंपा गया, जिस पर मंत्री इशारों में बोले-आप जो चाह रहे हैं, वह सब काम हो जाएंगे।

हिमाचल प्रदेश में अब दूसरी कक्षा से पढ़ाई जाएगी संस्कृत

संवाद सहयोगी, धर्मशाला : हिमाचल प्रदेश में अब संस्कृत दूसरी कक्षा से पढ़ाई जाएगी। हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड व स्टेट काउंसिल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एससीईआरटी) ने दूसरी से पांचवीं कक्षा तक का पाठ्यक्रम तैयार किया है और इसे स्कूल शिक्षा बोर्ड निदेशक मंडल से मंगलवार को मंजूरी मिल गई है। अगले सत्र से दूसरी कक्षा से संस्कृत शुरू की जाएगी।

शिक्षा मंत्री सुरेश भारद्वाज ने मंगलवार को धर्मशाला में बैठक के अनौपचारिक बातचीत में कहा कि इसके लिए शिक्षा बोर्ड को निर्देश दिए हैं कि जितने भी कार्यालय के बोर्ड हैं, उनमें हिंदी के साथ-साथ संस्कृत में भी नाम अंकित करें। इसके अलावा यह भी तय हुआ कि पांचवीं से दसवीं कक्षा की नैतिक शिक्षा व स्वतंत्रता संग्राम विषयों की कहानियों में भी बदलाव करते हुए उन्हें रुचिकर किया जाएगा। स्वतंत्रता संग्राम विषय का नाम बदलकर भारतीय प्रतिरोध एवं स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास किया जाएगा।

सीबीएसई के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनेंगे 363 पर्यावरण प्रेमी

राजेश भादू, फतेहाबाद

▶ 1730 में वृक्षों को बचाने के लिए बिश्नोई समाज के 363 लोग हो गए थे शहीद

▶ युवा बिश्नोई संगठन के सदस्यों ने प्रधानमंत्री से की थी मांग

बढ़ते प्रदूषण के संकट को देखते हुए अब विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में पढ़ाया जाएगा। इसकी शुरुआत मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने कर दी है। अब सीबीएसई के स्कूलों में पर्यावरण बचाने के लिए खेजड़ी के पेड़ को बचाने के लिए शहीद हुए 363 पर्यावरण प्रेमियों के बारे में पढ़ाया जाएगा। मंत्रालय की ओर से जारी पत्र में कहा गया है कि पर्यावरण बचाने के लिए बिश्नोई समाज के योगदान को विद्यार्थियों को बताया जाएगा। इसके लिए केंद्रीय शिक्षा बोर्ड के अलावा राज्यों के स्कूलों में भी इस पढ़ाया जाएगा।

विदित रहे कि इसके लिए अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन के सदस्यों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र भेजा था। 21 सितंबर को हरियाणा के फतेहाबाद में शहीदों की याद में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बिश्नोई समाज के अलावा अन्य वर्ग के पर्यावरण प्रेमी संगठनों ने मांग की थी कि 1730 को जोधपुर से 25 किलोमीटर दूर स्थित खेजड़ी के वृक्षों को बचाने के लिए बिश्नोई समाज के 363 लोग शहीद हो गए थे। इनका नेतृत्व अमृता देवी ने किया। उन्होंने अपने बच्चों के साथ पेड़ काट रहे राजा के सिपाहियों को रोकने का प्रयास किया। जब सिपाही पेड़ काटने से नहीं रुके तो उन्होंने पेड़ों के चिपक कर अपनी जान दे दी। संगठन के सदस्यों का कहना है कि इस घटना से प्रेरित होकर उत्तराखंड में भी चिपको आंदोलन चल चुका है। संगठन के सदस्यों का कहना है बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक गुरु जंभेश्वर महाराज ने शिक्षा दी थी कि सिर साटे रूख रहे तो भी जस्तो जाण अर्थात हमारे सिर देने के बदले पेड़ जिंदा रहता है तो इसके लिए हमें तैयार रहना चाहिए।